उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत - भाग - 2 - काव्य खण्ड

शीर्षक - 'कड़बक'

कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'

डॉ० देव चरण प्रसाद
(व्या० प्रो० हिन्दी)
रा० उ० सं० महाविद्यालय मुख्सेना
07/06/21

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न :- 'रकत का लेई' का क्या अर्थ है?

उत्तर :- प्रस्तुत पद में कवि ने लेई के रूपक से यह बताने की चेष्टा की है कि उसने अपने कथा के विभिन्न प्रसंगों को किस प्रकार एक ही सूत्र में बाँधा है। कवि कहता है कि मैंने अपने रक्त की लेई बनायी है अर्थात् कठिन साधना की है। यह साधना प्रेमरूपी आँसुओं से अप्लावित की गई है। कवि का व्यंग्यार्थ है कि इस कथा की रचना उसने कठोर सूफी साधना के फलस्वरूप की है और फिर इसको अपने प्रेमरूपी आँसुओं से विशिष्ट आध्यात्मिक विरह द्वारा पुष्ट किया है। लौकिक कथा को इस प्रकार अलौकिक साधना से परिपुष्ट करने का कारण भी जायसी ने अपनी काव्य कृति के द्वारा लोक जगत में अमरत्व प्राप्ति की प्रबल इच्छा बताया है।

प्रश्न :- कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है?

उत्तर :- महाकवि जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए की है कि दर्पण जिस प्रकार स्वच्छ और निर्मल होता है ठीक उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। एक आँख से अन्धे होकर भी कवि काव्य-प्रतिष्ठा से युक्त है। अतः वह पूजनीय है। कवि अपनी निर्मल वाणी द्वारा सारे जनमानस को प्रभावित करता है जिसके कारण सभी लोग कवि की प्रशंसा करते हैं और नमन करते हैं।

की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। आत्म विभोर होकर हृदय से की गई स्तुति और दिखावे के लिए की गई प्रार्थना दोनों में बहुत अन्तर है। हृदय से की गई प्रार्थना को ईश्वर जरूर सुनते हैं। सच्चे मन से की गई ईश्वर की आराधना व्यर्थ नहीं जाती है। प्रार्थना ही एक मात्र सत्य है, शेष क्रिया-कलाप झूठे हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रत्येक मानव को सच्चे हृदय से ईश्वर का स्मरण करना चाहिए। ऐसे स्मरण करने वालों को अदृश्य रूप में उपस्थित होकर भगवान हर संकट की घड़ी में सहायता करते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 07/06/21
रा० कृ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 बोर्ड परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर -

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी
पुस्तक का नाम - निबंधमाला - लेखक - आशा किशोर सुरेन्द्र शर्मा

प्रश्न :- 'निर्बल के बल राम' शीर्षक आत्मकथात्मक निबंध का सारांश लिखिए -

उत्तर :- 'निर्बल के बल राम' आत्मकथात्मक निबंध महात्मा गाँधी द्वारा लिखित एक बहुत ही महत्वपूर्ण और मानवीय जीवन को प्रेरित करने वाला निबंध है। आदमी जब घोर संकट में पड़ता है, जहाँ से निकलने का कोई मार्ग दिखाई नहीं पड़ता तब वह हारकर बैठ जाता है या भगवान का स्मरण करने लगता है। उस समय कहीं न कहीं से उसकी सहायता भी हो जाती है। धार्मिक अनुष्ठान पर विश्वास करने वाला व्यक्ति सोचता है - यह उसके धर्म और संयम का परिणाम है। नास्तिक व्यक्ति सोचता है कि हम संयोग से बच गए। परन्तु वास्तविकता कुछ और ही होती है। ईश्वर ही असहाय की सहायता करता है। 'निर्बल के बल - राम हैं' महात्मा गाँधी की यही धारणा रही है।

गाँधीजी इंग्लैण्ड वास के अन्तिम साल सन् 1890 की एक घटना का उल्लेख करते हैं। 'पोर्टस्मथ' में अन्नाहारियों का एक सम्मेलन हुआ था। उसमें अपने एक हिन्दुस्तानी मित्र के साथ गाँधीजी भी आमंत्रित थे। 'पोर्टस्मथ' खलासियों का बन्दरगाह कहलाता था। वहाँ काफी दुराचारिणी महिलाएँ रहती थी। वहाँ शायद ही कोई ऐसा घर मिले जो इस तरह के दुराचार से बचा हो।

गाँधी जी अपने मित्र के साथ ऐसे ही एक घर में ठहराये गये थे। ऐसा जानबूझ कर नहीं किया गया था, क्योंकि वहाँ का सामाजिक आचार जैसा होने के कारण किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया था।

गाँधीजी रात्रि में भोजन करने के उपरांत 'ताश' खेलने बैठे। इस खेल में एक दुराचारिणी महिला भी शामिल थी। हँसी मजाक प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में विनोद बढ़ते - बढ़ते इस स्थिति में पहुँचा कि वह केवल वाक् विनोद का विषय न रहा। अपितु शरीर के स्तर पर भी उतरने की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ताश अलग रखकर गाँधी जी डूबने की तैयारी कर ही रहे थे कि उनके हिन्दुस्तानी मित्र ने रोका - 'अरे तुझमें यह कलयुग क्यों? तेरा यह काम नहीं है। भाग यहाँ से।'

गाँधी जी शरमा गये। अब उन्हें होश हुआ कि वे कहाँ जा रहे थे। माता के समक्ष की गयी प्रतिज्ञा भी याद आ गयी। उनकी छाती धड़कने लगी। उन्होंने जल्दी ही पोर्टस्मथ छोड़ दिया। ईश्वर ने उनकी रक्षा की। ठीक ही कहा जाता है कि 'निर्बल के बल राम' होते हैं।

गाँधी जी का अटल विश्वास है कि हृदय से की गयी ईश्वर की

शेष आगे -

शास्त्री प्रथमखण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक — मुंशी प्रेमचन्द

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा० वि० गुरुकुल प्रीतिया
काल्हेरा

व्याख्या -

"वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी, क्योंकि वह देखने वाली आँखें न थी। वह उन्हें इन रसों का आस्वादन करने के योग्य ही नहीं समझती थी। कली प्रभात-समीर ही के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभात समीर कहाँ था?"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई हैं इसके लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं। प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचन्द वृद्ध मुंशी तोताराम से विवाह हो जाने के पश्चात निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असहनीय लगता था।

निर्मला में युवतियों की उमंग थी। वह भी साज-श्रृंगार करती और चाहती थी कि उनके यौवन की प्रशंसा हो। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध तोताराम थे। आयु का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई समवय का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रभात के प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी किसी समवय युवक के सामने खिल सकती थी परन्तु वृद्ध तोताराम की पत्नी के रूप में उसकी सारी उमंगें दब जाती थी।

प्रस्तुत गद्यांश में एक युवती के हृदय की अभिलाषाओं का मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है।

डॉ० देवचरण प्रसाद